आदिवासियों की शैक्षणिक स्थिति : (चंद्रपूर जिला, महाराष्ट्र)

भारत मे शिक्षा पर सभी का अधिकार नहीं था। शिक्षा को केवल एक ही वर्ग ने अपनी जागीर बनाकर रखा था और सर्वसामान्य जनता या वर्ग को शिक्षा से सदियोसे दूर रखा गया था। किसी भी समाज की उन्नति एवं विकास के लिए शिक्षा अत्यंत जरूरी है, शिक्षा के अभाव मे किसी की समाज का विकसित होना केवल एक कल्पना ही है। समाज मे शिक्षित समाज ही एक सभ्य समाज कहलाता है। शिक्षा से ही मनुष्य प्राणी को सही और गलत का सही ज्ञान प्राप्त होता है। सही विचार करने की शक्ति शिक्षा से मिलती है। भारत का इतिहास रहा है की भारत मे अनेक शासको का वर्चस्व रहा है, इसका कारण भारत की जनता अशिक्षित थी और भारत की जनता को शिक्षा का अधिकार नहीं था। भारत के सभी शासको मे ब्रिटिश शासन लगभग 150 साल से भी ज्यादा समय तक रहा, इसका मुख्य कारण भारत की जनता अशिक्षित है और साथ ही भारत की जनता को जाती धर्म मे बांटा गया है यह ब्रिटिश सरकार ने जान लिया था, और इस कारण उन्होने इस परिस्थिति का फायदा उठाकर भारत पर लंबे समय तक राज किया। भारत मे ब्रिटिश सरकार ने राज किया पर इसी कारण भारत मे शिक्षा का अधिकार भारत के सभी जाती धर्म को मिला। लॉर्ड मैकले जैसे ब्रिटिश अधिकारी के कारण भारत मे शोषित और गुलामो जैसे हालत मे रह रही जनता को शिक्षा का अधिकार मिला।

जन्म लेने के बाद सभी सजीव अपने नजदीक की परिस्थिति से समायोजन करते है, जंगल मे रहने वाले सभी जानवर भी खाना खोजने के लिए नयी नयी कला बाजिया सीखते है, पक्षी सर्दी मे एक जगह के दूसरे जगह मे जाते है। हाती जैसे जानवर सूखे मे लंबी लंबी यात्रा कर के पानी की

तलाश करते है, अर्थात यह सब करने के लिए उनके पास इसका अनुभव होता है। और इस अनुभव को ही हम शिक्षा कह सकते है। जानवरो के भांति ही इंसान भी अपने पूर्वजो से कुछ सीखता आया है। और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक वह अनुभवो को आगे बढ़ाता रहा है। जंगल मे आदिवासी भी अपने पूर्वजो से ही सीखकर शिकार करना और खाना,फलो को जमा करना सिखता है, अपनी बोलीभाषा अपनी संकृति को आगे बढ़ाता है। इसी को हम अनौपचारिक शिक्षा कहते है। और जो शिक्षा हमे सिर्फ पाठशाला मे सिखाई जाती है उसे हम औपचारिक शिक्षा कहते है। सभी शिक्षा का केवल एक ही उद्देश होता है की बालक या छात्र को इस योग्य बनाया जाये की वह अपना पेट खुद भरने के काबिल बन सके और किसी भी परिस्थिति का सामना करने योग्य बन सके। शारीरिक गती, बोलीभाषा, नैतिकता आदि के लिए पारिवारिक शिक्षा का महत्व बहुत ज्यादा है और भाषा, मानसिक विकास और कल्पना शक्ति के विकास के लिए औपचारिक शिक्षा जरूरी है।

मानवी जीवन मे शिक्षा का अन्यन साधारण महत्व है क्योकि की शिक्षा ही मनुष्य को सही से जीवन बिताने का, विचार करने का, सही गलत को पहचाने का और अपने शोषण से बचने का एक मात्र साधन है। आदिवासी समाज सदियोसे ही जंगलो मे रहता आया है इस कारण आदिवासी समाज मे शिक्षा का स्त्रोत उनके पूर्वज और पूर्वजो द्वारा बताया गया ज्ञान है और आदिवासी समाज सिर्फ और सिर्फ पारंपरिक शिक्षा ही लेता आया है। दूसरी बात यह है की, आदिवासी समाज बाहरी दुनिया है बिलकुल कटा हुआ है इस कारण बाहरी दुनिया मे क्या हो रहा यह जंगल मे रहने वाले आदिवासी समाज को कभी पता ही नहीं चलता।

भारत के आजादी के बाद भारत काफी तरक्की कर चुका है पर यह बदलाव अभी तक आदिवासी समाज और आदिवासी महिलाओं तक नहीं पहुची है। आदिवासी समाज जिस स्थान

मे रहता है वहाँ आज तक कोई पाठशाला नहीं खुली है। और जिस जगह पर पाठशाला पहुची है, वह कोई शिक्षक पढाने को तयार नहीं है। और जो शिक्षक पढ़ाने को तयार है तो उसकी आदिवासी की बोलीभाषा या क्षेत्रीय भाषा का ज्ञान नहीं है।

आदिवासी समाज का सदियो से शोषण होता आ रहा है, और उसका कारण अशिक्षा है, जंगल के ठेकेदार, सावकर उन्हे सदियोसे शोषिन कर रहे है। आदिवासी को बंधुवा मजदूर बना कर रखा जाता है, उन्हे गुलाम बना कर पीढ़ी दर पीढ़ी उन्हे गुलामो की भांति काम कराया जाता है।

शिक्षा न होने के कारण आदिवासी का सबसे ज्यादा आर्थिक शोषण होता है। उसमे भी महिलाओं का शोषण सबसे ज्यादा होता है। भारत एक पुरुष प्रधान देश है और इस देश मे महिलाओं को समता के भाव से नहीं देखा जाता, आदिवासी महिलाओं का शोषण उसके परिवार, समाज के साथ साथ जंगल के ठेकेदार और सावकार करते है। कुछ पैसो के लिए जंगल के ठेकेदार पूरा दिन आदिवासी महिलों से काम करवाता हा और उन्हे पेटभर खाना मिले इतने भी पैसे उनके मजदूरी के उने नहीं दिये जाते। आदिवासी महिलाओं के परिवार मे अगर कोई बीमार हो जाए और उन्हे पैसो की जरूरत पड़े तो सावकर उने पैसे उधर देते है और उनका ब्याज सारी ज़िंदगी भर चुकाना पड़ता है, सावकर पैसो के कारण दिन रात उनसे कम कराते है, आदिवासी महिलाओं का, आदिवासी लड़कियो का बड़े मात्रा मे शारीरिक शोषण करते है, बलात्कार, जबरदस्ती, यह सब बड़े मात्रा मे आदिवासी महिलाओं के साथ होता है। जंगल के ठेकेदार आदिवासी समाज का शोषण करते है क्योकि आदिवासी समाज और खास करके आदिवासी महिलाओं मे शिक्षित होने का प्रमाण शून्य है।

1967 मे संवैधानिक अधिकार मिलने बाद भी आदिवासी समाज मे सामाजिक न्याय और शैक्षणिकब जागरूकता बेहद कम है, आज भी जनजातिय समाज ऋणग्रसता, भूमि- हस्तांतरण,

गरीबी, अस्थायी खेती, बेरोजगारी, मदिरापान, अशिक्षा, बीमारी जैसे भयंकर समस्या से ग्रसित है। संविधान के अनुच्छेद 46 अनुसार राज्य विशेष सावधानी के साथ समाज के कमजोर वर्गो विशेषकर अनुसूचित जाती / जनजाति क शैक्षिक एवं आर्थिक हितों के उन्नती को बढ़ावा देगा। साथ ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1886 मे असमानताओ को दूर करने व अनुसूचित जनजाति को शैक्षिक अवसरो की समानता प्रदान करने के लिए बल दिया गया था, जो शिक्षा से उपेक्षित है।

आदिवासी अगर शिक्षित हो जाए तो, शिक्षा के कारण काफी सकारात्मक बदलाव हो सकते है, शिक्षा के कारण आत्मविश्वास का निर्माण होता है। और अगर एक महिला शिक्षित हो तो वह पूरे परिवार को शिक्षित कर सकती है। आदिवासी समाज मे अगर उच्च शिक्षित महिला हो तो वह अपने समाज को काफी मदत और जागृत कर सकती है। आदिवासी महिलाओं का शोषण शिक्षा के कारण रुक सकता है और आदिवासी महिला अपने परिवार का विकास कर सकती है।

उच्च शिक्षा और गुणवत्ता पूर्वक शिक्षा के कारण आदिवासी अपने पाव पर खड़े होकर स्वावलंबी हो सकते है। शिक्षा के कारण आदिवासी महिलाओं को कभी किसी पुरुष के ऊपर या अपने पति के ऊपर निर्भर रहने की जरूरत नहीं होगी। इस कारण आदिवासीयों की वर्तमान मे शैक्षणिक स्थिति और समस्या क्या है यह जानना अत्यंत आवश्यक है।

निम्नलिखित अध्यायों से आदिवासी शिक्षा से संबधित जानकारी का विवरण किया गया है।

1.9 अध्यायीकरण :-

प्रस्तुत शोधकार्य का अध्यायीकरण निम्नलिखित प्रकार से है।

अध्याय प्रथम – शोध प्रविधि का परिचय

1.1 – प्रस्तावना

1.2 – साहित्य पुनरावलोकन

1.3 – शोध के महत्व

1.4 – अध्ययन क्षेत्र

1.5 – उद्देश्य

1.6 – परिकल्पना

1.7 – शोध प्रविधि

1.8 – इकाई

1.9 – अध्यायिकरण

प्रकरण 2) – आदिवासी : एक परिचय

प्रकरण 3)– आदिवासी एवं शिक्षा

प्रकरण 4) – चंद्रपुर जिल्हे के आदिवासीयो की शैक्षणिक स्थिति और परिवर्तन

प्रकरण 5) – निष्कर्ष एवं सुझाव

संदर्भ ग्रंथ सूची

Educational status in Tribal community : (Chandrpur district, Maharashtra)

All had not the right to education in India. Education was the only reserve for only one class and kept their manor and the common people away from education . for any societies development education is essential, Lack of education in the development of any society is only a fantasy. A civilized society is called educated society. Academic human beings acquire knowledge of right and wrong . The idea comes from the power of education to think what is good and bad for our society. India's history has been dominated by many rulers, because the uneducated people of India and the people of India had not the right to education, taking advantage of this situation for a long time ruler ruled over India. Among of all rulers of India British rule in India for more than 150 years. primarily because the people of India to the people of India are illiterate and have divided into cast and religion .The British government understood this fact, and therefore he taking advantage of this situation for a long time to ruled over India. In India, the British government ruled that the right to education in India is India's got religion. Lord Maclay exploited as British officer in India and living in the condition of slaves as people got the right to education.

After the delivery of all living near you is adjusting to the situation, all the animals living in the forest to find food, learn fresh new art, birds in winter go other places. In drought animals like elephant make long journey in search of water, it is to experience it with them. And this experience we can say is education. Animals of the same kind as the person learns something from their ancestors came. And from generation to generation, he has continued with experience. Aboriginal learning from their ancestors in the forest to hunt and eat the fruits that deals with stowaways to submit your local speeches adds to its culture. This is what we call informal education and that education is taught in schools and what we just say we have formal education. The only aim of all education is to be a child or student has qualified to become capable of filling his belly itself and is eligible to face any situation. Physical speed, local speeches, ethics etc. The importance of family education is very high and the language, mental development and formal education is essential for the development of imagination.

In human life, the importance of education is extra ordinary because of living, to consider, to recognize right from wrong and the only means of escape from their exploitation is learned from education. from long time tribal society leaved in the forests and education sources in tribal community is story or information told by their fathers and ancestor. Tribal knowledge and only took an traditional education. Secondly, the tribal society is cut off completely from outside world. Therefore what happening in the outside world society never undiagnosed by living in the wild tribal’s.

After India's independence, India has come a long way but this change is not yet reached to tribal men and tribal women. Aboriginal community lives in the place where there is as this date no school is opened. And the place where school is opened, Teacher is not ready to teach in tribal areas school. And when teacher is ready to teach teacher don't know the tribal local speeches or not have knowledge of the regional language. From long time tribal society exploit , and the reason is illiteracy, forest contractors, are exploit tribal from very long time . Tribal kept bonded laborers are enslaved them for generations, they are made to work like slaves.

In the absence of education tribal is the most economic exploitation. Which also has the highest exploitation of women. India is a patriarchal country and in a spirit of equality for women in this country are not seen, the exploitation of tribal women in his family, in the society and from forest contractor. For money to some tribal forest contractor occurring all day at work makes enough money to eay. they paid their wages not rising. Aboriginal women in the family is ill and if any of them if you need the money and if tribal lend money from collector or moneylender the tribals have to pay the money and interest throughout his life, because of the money Moneylender them at night is employed, Aboriginal women, Aboriginal girls When large volumes of physical abuse, rape, coercion, it all happens with large amounts of tribal women. The contractor is the exploitation of the forest because tribal society and especially Aboriginal women in Aboriginal society is zero evidence to be educated.

In 1967, after meeting the constitutional rights and social justice in tribal educational awareness is extremely low, still tribal society, land transfer, poverty, temporary agriculture, unemployment, alcoholism, illiteracy, disease is suffering from such severe problems. In accordance with Article 46 of the Constitution of the weaker sections of society, particularly in the special care SC / ST Growth will boost the educational and economic interests. The National Policy on Education in 1886 to remove differences and to provide ST community equality of educational opportunities was stressed to which education is neglected.

If the tribal community get educated , education can be a huge positive change, because education is to build confidence. And if a woman is educated she can educate the whole family. if highly educated woman who was awakened our society and can help significantly Tribal society. Aboriginal education stopped because of the exploitation of women and aboriginal women in my family can grow.

Higher education and quality education for aboriginal trail on your feet can stand and be self-supporting. Education of tribal women over men or anyone will not need to rely on their husbands. In the current academic situation and the cause of tribal it is essential to know what the problem is.

The following chapters describe the information that is related to Aboriginal education

Chapterisation :-

Chapter first-introduction to research methods

1.1 Introduction

1.2 – Literature review

1.3 – The importance of research

1.4 – Study area

1.5 – Purpose

1.6 – Hypothesis

1.7- Research methods

1.8 – Unit

1.10 Chapterisation

Chapter 2) – Tribal: an introduction

Chapter 3)- Tribal & education

Chapter 4) – Tribal's education status and changes in Chandrapur districts.

Chapter 5) – conclusions and suggestions

Reference

bibliography